EAST POINT SCHOOL CLASS-VIII WEEKLY
WORK PLAN-JULY WEEK-3

ENGLISH

Elephants Raid the Kitchen
VIDEO LINK: https://youtu.be/dg4lN4Re_j0

SUMMARY

The extract from the book Elephant Memories: Thirteen Years in the Life of an Elephant Family by Cynthia J. Moss features Tuskless, an elephant and her companions entering the camp-kitchen after they got tempted by the smell of bananas and other fruits. They raided the kitchen in such a way that it was about to blow off.

Day Before the Raid

- Masaku the cook and camp-worker was on a five day leave.
- Phyllis, the narrator's camp-mate, had returned from a trip to Nairobi with a huge load of groceries, meat, fresh-fruits and vegetables.

The Morning of the Raid

- Film-makers Warren and Genny Garst arrived at the camp. They too brought another load of food.
- The food was stored in the car, kitchen and fridges.

The Raid

- That evening, the narrator, Phyllis and the film-makers went for a dinner. The camp was totally unattended.
- Left alone, Tuskless, Teddy, Tonie and Tilly fed on grass.
- Tuskless smelt food and turned towards the kitchen.
- Tuskless rumbled loudly and called her friends to follow her.
- The elephants approached the kitchen.
- Tuskless wrapped her trunk around the sisal pole that supported the kitchen.
- Tuskless got the pole wrenched.
- Tuskless made a sizeable hole in the wall of the kitchen and reached her trunk out in search of bananas.
- Tuskless felt impatient and started pushing the wall.
- The other elephants joined her.
- The camp collapsed sideways.
- Tuskless entered and the others elephants followed her.
- They enjoyed eating bananas, mangoes, pineapples, papaya and oranges.
- They started feeding on carrots, potatoes, tomatoes, avocados, egg-plants, lettuces, cabbages, cauliflower, etc.
- They started lifting the tin trunks and turned them upside down until they disgorged their contents.
- Tuskless was not satisfied. She could smell the bread, cookies and crackers in a wooden cupboard. So, she knocked it down, smashed it open and ate it all.
- The cooler and the smaller fridge was crushed.
- The elephants pulled the bigger fridge until it got disconnected from its gas cylinder.
- Noxious propane gas started leaking from the cylinder.
- The elephants started tackling the other cupboards with jams and spices.
- The author entered the scene in her Land Rower car.

- The elephants grabbed a last trunkful and started backing away.
- Tuskless stayed back for a while because she was reluctant to leave the feast/food.
- The author entered the kitchen. Tuskless was finally forced to leave the kitchen.
- Grabbing a box of spaghetti (like noodles) and a paper bag full of half-pound garlic, Tuskless went out to join the other elephants.

<u>After the Raid</u>

- Tuskless doesn't stop raiding camps even after that incident.
- She raided as many as three or four camps a day.
- Now, she inspects the narrator's camp to make another attempt but is chased away by Masaku.
- She is nonchalant / unmoved when Masaku comes out.
- Raids will go on for the elephants.

The Raid – Through the eyes of the Elephants
QUESTION ANSWERS (To be done in Notebook)

1. **Who was Tuskless? How was she drawn to the camp?**
2. **How had Tuskless developed a taste for bananas?**
3. **How did the elephants raid the kitchen?**
4. **Getting food out of the tent was not easy for Tuskless. Explain.**
5. **What was 'near ecstasy' for the raiders?**
6. **What did the narrator first do on her arrival at the camp?**
7. **Why did the narrator blame herself for the mess?**

HINDI

दीवानों की हस्ती

कवि – भगवतीचरणवर्मा

जन्म – 30 अगस्त 1903

मृत्यु – 5 अक्टूबर 1981

Video Links: -https://www.youtube.com/watch?v=qKZzs64OAOg

https://www.youtube.com/watch?v=y7Ce5ZzXhpw

दीवानों की हस्ती **कविता** प्रवेश

इस कविता में कवि ने अपने प्रेम से भरे हृदय को दर्शाया है क्योंकि कवि का स्वभाव बहुत ही प्रेमपूर्ण है। सभी संसार के व्यक्तियों से वह प्रेम करता है और खुशियाँ बाँटता है यही सब इस कविता में दर्शाया है। वो अपने जीवन को अपने ढंग से जीते हैं, मस्त-मौला है चारों ओर प्रेम बाँटने का सन्देश देते हैं। इस कविता के द्वारा एक सीख देते है की हमें सबके साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। वे खुशियों का संचार करते हैं, जहाँ भी जाते हैं खुशियाँ बिखेरते हैं और जीवन में असफल हो जाने पर हार जाने पर भी किसी को दोष नहीं देते । इस कविता में सन्देश देते हैं कि हमें अपनी सफलता और असफलता का श्रेय स्वयं को ही देना चाहिए क्योंकि अगर हम असफल होते है तो उसमें भी कहीं न कहीं दोष हमारा ही होता है किसी और का नहीं और सफल होते है तो भी श्रेय हमारा ही होता है क्योंकि महेनत हमने की होती है। और स्वंय असफल होने पर किसी अन्य को दोषी नहीं मानते है। वे जब जीवन में कभी हार जाते हैं, असफल हो जाते है इस सब का दोष किसी और को नहीं देते । यह इंसानियत की बहुत ही बड़ी बात है जोकि कवि में देखी जाती है।

दीवानों की हस्ती **कविता** सार

प्रस्तुत कविता में कवि का मस्त-मौला और बेफिक्री का स्वभाव दिखाया गया है । मस्त-मौला स्वभाव का व्यक्ति जहां जाता है खुशियाँ फैलाता है। वह हर रूप में प्रसन्नता देने वाला है चाहे वह ख़ुशी हो या आँखों में आया आँसू हो। कवि 'बहते पानी-रमते जोगी' वाली कहावत के अनुसार एक जगह नहीं टिकते। वह कुछ यादें संसार को देकर और कुछ यादें लेकर अपने नये-नये सफर पर चलते रहते हैं। वह सुख और दुःख को समझकर एक भाव से स्वीकार करते हैं। कवि संसारिक नहीं हैं वे दीवाने हैं। वह संसार के सभी बंधनों से मुक्त हैं। इसलिए संसार में कोई अपना कोई पराया नहीं है।जिस जीवन को उन्होने खुद चुना है उससे वे प्रसन्न हैं और सदा चलते रहना चाहते हैं।

दीवानों: अपनी मस्ती में रहने वाले

हस्ती: अस्तित्व

मस्ती: मौज

आलम: दुनिया

उल्लास: ख़ुशी

जग: संसार

छककर: तृप्त होकर

भाव: एहसास

भिखमंगों: भिखारियों

स्वच्छंद: आजाद

निसानी: चिन्ह

उर: हृदय

असफलता: जो सफल न हो

भार: बोझ

आबाद: बसना

स्वयं: खुद

(1) हम दीवानों की क्या हस्ती,
हैं आज यहाँ, कल वहाँ चले,
मस्ती का आलम साथ चला,
हम धूल उड़ाते जहाँ चले।
आए बन कर उल्लास अभी,
आँसू बन कर बह चले अभी,
सब कहते ही रह गए, अरे,
तुम कैसे आए, कहाँ चले?

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी की पाठय पुस्तक "वसंत-3" में संकलित कविता "दीवानों की हस्ती" से ली गयी है। इसके कवि "भगवती चरण वर्मा" है। इस कविता में कवि ने मस्त-मौला और फक्कड़ स्वभाव का वर्णन किया है।

व्याख्या – इसमें कवि कहते हैं कि उनका स्वभाव मस्त-मौला है, वह एक स्थान पर टिके नहीं रहते। वे जहाँ भी जाते हैं, चारों तरफ खुशियाँ फैल जाती है। कवि जहाँ धूल उड़ाते हुए जाते है वही चारों तरफ प्रसन्नता का माहौल हो जाता है। कवि रमता जोगी है। वह मन में उत्पन्न भावों की भाँति कभी ख़ुशी का सन्देश तो कभी आँखों में बहते आँसू की तरह सब जगह फ़ैल जाता है। कवि कहते हैं कि वे इतनी जल्दी आते जाते रहते हैं की लोगों को पता ही नहीं चलता कि वे कब आए और कब चले गए।

(2) किस ओर चले? यह मत पूछो,
चलना है, बस इसलिए चले,
जग से उसका कुछ लिए चले,
जग को अपना कुछ दिए चले,
दो बात कही, दो बात सुनी।
कुछ हँसे और फिर कुछ रोए।
छककर सुख-दुख के घूँटों को
हम एक भाव से पिए चले।

व्याख्या- संसार जब कवि से जानना चाहता है अब वो किस ओर जा रहे हैं तो वे कहते हैं कि ये मत पूछो कि मैं कहाँ जा रहा हूँ क्योंकि मेरी कोई निश्चित मंजिल नहीं है। मैं चलता हूँ क्योंकि यह मेरा स्वभाव है। कवि कहते हैं कि वो संसार से कुछ ज्ञान लेकर और कुछ अपने पास से देकर जा रहे हैं। कवि का स्वभाव चलने का है परन्तु वह जहां रुकते हैं वहां लोगों से प्रेम भरी बातें करते हैं तथा उनकी बातें सुनते हैं और उनसे अपना तथा उनका सुख-दुख बाटतें हैं तथा सुख-दुःख रूपी अमृत का घूँट पीकर वह फिर नये सफर पर चल देते हैं।

(3) हम भिखमंगों की दुनिया में,

स्वच्छंद लुटाकर प्यार चले,

हम एक निसानी – सी उर पर,

ले असफलता का भार चले।

अब अपना और पराया क्या?

आबाद रहें रुकने वाले!

हम स्वयं बँधे थे और स्वयं

हम अपने बँधन तोड़ चले।

व्याख्या – कवि के अनुसार ये संसार भिखारी है इसके पास प्रेम नामक धन नहीं है। किन्तु कवि पूरी आजादी से सब जगह प्रेम लुटाते चलते हैं क्योंकि कवि सारे संसार को अपना मानते हैं इसीलिए वे बंधन मुक्त हैं। इतना प्रेम होते हुए भी एक सफल संसारिक व्यक्ति न बन पाने की दर्दया निशानी उनके हृदय में है और यही भार उनकी असफलता है। कवि के अनुसार संसार में कोई अपना और कोई पराया नहीं है। वे कहते हैं वे स्वयं इन बंधनों में बंधे थे और स्वयं इन बंधनों को तोड़कर आगे चलते जा रहे हैं तथा इससे वे प्रसन्न हैं और सदा चलते रहना चाहते हैं।

दीवानों की हस्ती प्रश्न-अभ्यास (महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर)

प्र.1 कवि ने अपने आने को 'उल्लास' और जाने को 'आँसू बन कर बह जाना' क्यों कहा है? (3)

प्र.2 भिखमंगों की दुनिया में बेरोक प्यार लुटाने वाला कवि ऐसा क्यों कहता है कि वह अपने हृदय पर असफलता का एक निशान भार की तरह लेकर जा रहा है? क्या वह निराश है या प्रसन्न है? (5)

प्र.3 कविता में ऐसी कौन-सी बात है जो आपको सब से अच्छी लगी? (5)

MCQ

(1) 'दीवानों की हस्ती' कविता के रचयिता कौन हैं?

(a) महादेवी वर्मा

(b) भगवतीचरण वर्मा

(c) सुभाष गताडे

(d) जया जादवानी

(2) इस कविता में किसकी हस्ती की बात कही गई है?

(a) कवि की

(b) दीवानों की

(c) आम लोगों की

(d) सभी की

(3) मस्ती भरा जीवन जीने वाले लोगों के बीच क्या बन जाते हैं ?

(a) आदर्श

(b) शोक

(c) मेहमान

(d) उल्लास

(4) वे संसार से कैसा भाव रखते हैं?

(a) मैत्रीभाव का

(b) समान भाव का

(c) ईर्ष्या भाव का

(d) भावुकता से भरा भाव

(5) बलि-वीरों के मन में बलि होने की चाहत किसके लिए है?

(a) परिवार के लिए

(b) राज्य के लिए

(c) देश के लिए

(d) अपने-आप के लिए

(6) सुख-दुख में कौन-सा समास है?

(a) तत्पुरुष

(b) द्विगु

(c) वंद्व

(d) कर्मधारय

(7) यह दुनिया किनकी है?

(a) भिखमंगों की

(b) दीवानों की

(c) कवि की

(d) सभी की

(8) दीवानों को क्या पछतावा है?

(a) भिखमंगे बनने का

(b) स्वच्छंद प्यार लुटाने का

(c) लोगों को मस्त न बना पाने का

(d) कोई नहीं

हम दीवानों की क्या हस्ती,
हैं आज यहाँ, कल वहाँ चले,
मस्ती का आलम साथ चला,
हम धूल उड़ाते जहाँ चले।
आए बनकर उल्लास अभी,
आँसू बनकर बह चले अभी,
सब कहते ही रह गए, अरे,
तुम कैसे आए, कहाँ चले?

(1) कवि एवं कविता का नाम लिखिए।

(2) दीवाने शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है? वे एक जगह पर टिककर क्यों नहीं रहते?

(3) दीवानों के बारे में लोग क्या-क्या कहते हैं?

(4) दीवाने वहाँ से इतनी जल्दी क्यों जा रहे हैं?

(5) लोगों की खुशियाँ लंबे समय तक क्यों नहीं बनी रह पाती है?

MATHS

Square and Square Root

Video Links:

https://www.youtube.com/watch?v=Rz0lOGtCkLE

https://www.youtube.com/watch?v=rM8VXpNKi5o

Learning Outcomes:

i. To help the students understand the concept of square numbers and its properties.
ii. To help the students understand the concept and method of finding Pythagorean triplets.

Introduction:

Observe the following table:

Number	Squares
1	$1x\ 1= 1^2= 1$
2	$2 \times 2 = 2^2 =4$
3	$3 \times 3 = 3^2 = 9$

4	$4 \times 4 = 4^2 = 16$
6	$6 \times 6 = 6^2 = 36$
8	$8 \times 8 = 8^2 = 64$
N	$n \times n = n^2$

Since, 4 can be expressed as $2 \times 2 = 2^2$ .9 can be expressed as $3 \times 3 = 3^2$, all such numbers can be expressed as the product of the number with itself.
Such numbers like 1, 4, 9, 16, 25, ... are known as square numbers.
In general, if a natural number m can be expressed as n^2, where n is also a natural number, then m is a square number.
These numbers are also called perfect squares.

Properties of Square Numbers

1. All square numbers end with 0, 1, 4, 5, 6 or 9 at unit's place. None of the square numbers end with 2, 3, 7 or 8 at unit's place.
2. If a number has 1 or 9 in the unit's place, then it's square ends in 1.

Number	Square
1	1
9	81
11	121
19	361

3. When a square number ends in 6, the number whose square it is, will have either 4 or 6 in unit's place.

Number	Square
4	16
6	36
14	196
16	256

4. When a square number ends in 4, the number whose square it is, will have either 2 or 8 in unit's place.

5. When a square number ends in 9, the number whose square it is, will have either 3 or 7 in unit's place.

6. Number of zeros at the end of a perfect square are always even.
7. Squares of even numbers are always even and squares of odd numbers are always odd.
8. There are 2n non perfect square numbers between the squares of the numbers n and (n + 1). For example: Between $9(=3^2)$ and $16(=4^2)$ there are $2 \times 3 = 6$ non perfect square numbers. They are 10, 11, 12, 13, 14, 15.
9. Adding odd numbers:
   Consider the following

$1^2 = 1 = 1$
$2^2 = 4 = 1 + 3$
$3^2 = 9 = 1 + 3 + 5$
$4^2 = 16 = 1 + 3 + 5 + 7$
$5^2 = 25 = 1 + 3 + 5 + 7 + 9$
$6^2 = 36 = 1 + 3 + 5 + 7 + 9 + 11$
$7^2 = 49 = 1 + 3 + 5 + 7 + 9 + 11 + 13$
$8^2 = 64 = 1 + 3 + 5 + 7 + 9 + 11 + 13 + 15$
$9^2 = 81 = 1 + 3 + 5 + 7 + 9 + 11 + 13 + 15 + 17$
etc

So we can say that the sum of first n odd natural numbers is n^2.

If the number is a square number, it has to be the sum of successive odd numbers starting from 1.
If a natural number cannot be expressed as a sum of successive odd natural numbers starting with 1, then it is not a perfect square.

Pythagorean triplets

A Pythagorean triple consists of three positive integers a, b, and c, such that $a^2 + b^2 = c^2$

$a^2 + b^2 = c^2$

(3,4,5) (6,8,10) (7,24,25)

(5,12,13) (20,21,29) (8,15,17)

(20,99,101) (48,55,73) (17, 144, 145)

Pythagorean Triples

For any natural number m > 1, we have $(2m)^2 + (m^2 - 1)^2 = (m^2 + 1)^2$. So, 2m, $m^2 - 1$ and $m^2 + 1$ forms a Pythagorean triplet.

Example: Write a Pythagorean triplet whose smallest member is 8.

Solution: We can get Pythagorean triplets by using general form 2m, $m^2 - 1$, $m^2 + 1$.

Let us first take $m^2 - 1 = 8$

So, $m^2 = 8 + 1 = 9$

which gives m = 3

Therefore, 2m = 6 and $m^2 + 1 = 10$

The triplet is thus 6, 8, 10. But 8 is not the smallest member of this.

So, let us try 2m = 8

then m = 4

We get $m^2 - 1 = 16 - 1 = 15$

and $m^2 + 1 = 16 + 1 = 17$

The triplet is 8, 15, 17 with 8 as the smallest member.

<u>Solve the following Questions:</u>

Q-1) Which of the following is a perfect square?

a. 1057
b. 625
c. 7928
d. 64000

Q-2) Which of the following will have 6 at unit place?

a. 19^2

b. 11^2
c. 24^2
d. 13^2

Q-3) If 5278 is squared, then what will be at unit place?

a. 8
b. 7
c. 6
d. 4

Q-4) How many natural numbers lie between 9^2 and 10^2**?**

a. 17
b. 18
c. 19
d. 20

Q-5) What will be the number of zeros in square of 400?

a. 2
b. 3
c. 4
d. 6

Q-6) Without adding , find the sum of: 1 + 3 + 5 + 7 + 9 + 11 + 13 + 15 + 17 +19

Q-7) Find a Pythagorean triplet whose one member is 18.

Q-8) Find the square of 46 and 79.

Q-9) The following numbers are obviously not perfect squares. Give reason.

a. 222
b. 898
c. 1097

Activity:

Observe the following pattern and find the missing digits:

$7^2 = 49$

$67^2 = 4489$

$667^2 = 444889$

$6667^2 = 4……8….9$

$66667^2 = 4……..8……..9$

$666667^2 = 4……..8……..9$

Using above pattern find the square of 6666667

SCIENCE

Chemical Properties of Metals & Non-Metals:

- ***Reaction with Oxygen***

  Example: If a copper vessel is left open in the presence of moist air, then, a dull green coating will be observed on it. The green material is a mixture of copper hydroxide ($Cu(OH)_2$) and copper carbonate ($CuCO_3$). Following is the reaction to express it:

  $$2Cu + H_2O + CO_2 + O_2 \rightarrow Cu(OH)_2 + Cu$$

ACTIVITY

Testing of nature of Rusting:

(i) Collect a spoonful of rust and dissolve it in a very little amount of water.
(ii) The rust remains suspended in water. Shake the suspension well.
(iii) Test the solution with red and blue litmus papers. The red litmus turns blue.So, generally metallic oxides are basic in nature.

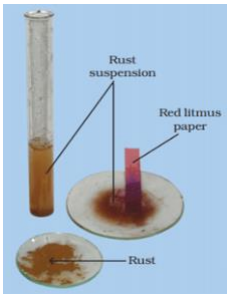

For Non-metals:

Generally, non-metals also produce oxides when reacted with oxygen. But, in contrast to metals, non-metal oxides are acidic in nature.

Testing the nature of non-metal:

(i)Take a small amount of powdered sulphur in a deflagrating spoon and then heat it. (ii)As soon as sulphur starts burning, introduce the spoon into a gas jar/ glass tumbler.(iii)Cover the tumbler with a lid to ensure that the gas produced does not escape.

(iv) After some time remove the spoon. Add a small quantity of water into the tumblerand quickly replace the lid. Shake the tumbler well. Check the solution with red and blue litmus papers.

(iv) The name of the product formed in the reaction of sulphur and oxygen is sulphur dioxide gas. When sulphur dioxide is dissolved in water, sulphurous acid is formed. Following is the reaction to express it:

(v) The sulphurous acid turns blue litmus paper red.

$$\underset{\text{(Sulphur)}}{S} + \underset{\text{(Oxygen)}}{O_2} \rightarrow \underset{\text{(Sulphur dioxide)}}{SO_2}$$

$$\underset{\text{(Sulphur dioxide)}}{SO_2} + \underset{\text{(Water)}}{H_2O} \rightarrow \underset{\text{(Sulphurous acid)}}{H_2SO_3}$$

Generally, oxides of non-metals are acidic in nature

- ***Reaction with Water:***

For Metals:

Some metals react vigorously with water like in case of sodium. Sodium is stored in kerosene. While, some metals reacts very slowly with water like in case of iron.

METAL SODIUM

For Non-metals:

Generally, most non-metals do not react with water but there are some non-metals which are quite reactive in air like phosphorous, which is very reactive and is kept inwater to prevent explosion.

- ***Reaction with Acids:***

For Metals:

Generally, a metal reacts with acids and releases hydrogen gas with a 'pop' sound. The presence of hydrogen gas is confirmed by bringing a burning matchstick or candle near the gas. And when the burning matchstick or candle produces pop soundthen it means that hydrogen gas has evolved.

It is found that, copper does not react with hydrochloric acid while it reacts with sulphuric acid.

For Non-metals:

Generally, non-metals do not react with acids.

ASSIGNMNET -1

SCIENCE –VIII

METALS AND NON-METALS

1. Can you store lemon pickle in an aluminium utensils?Explain.
2. Why copper can't displace zinc from its salt solution?
3. Why sodium and potassium are stored in kerosene?
4. Why aluminum foils are used to wrap food items?
5. Why immersion rods for heating liquids are made up of metallic substance?

6. If you put one end of the rod of a metal in hot water,you feel hot at the other end.What does it mean?What is this property of metal called?
7. What property of metal make them useful as electric wires?
8. Why should foodstuff with acid component not be stored in metallic container?

SOCIAL STUDIES

Subject-History

Topic:- Chapter 4 – Tribal, Dikus and the vision of the golden age

Sub Topic 1:- **How did Tribal Groups Live**

Some were Jhum Cultivators:

Learning Objectives:- Students learn the about the various tribal groups in India and Their livelihood and practices.

Methodology:-PPT, Video and word file

You tube link:-https://youtu.be/1nzfpB2b_5Y

Activity 1:- Find out any two tribal groups of Chhotanagpur plateau and write a short note ,along with their pictures.

The tribes had customs and rituals that were very different from those laid down by Brahmas. they also did not had any social distinctions.

In mid-1870s Birsa was born in a family of Mundas-a tribal group that lived in Chhotanagpur. He is known to oppose British interference in the name of administration in forest areas and revolted in 1895 till his death in1900.

How did Tribal Groups Live: By the 19th century, tribal people in different parts of India were involved in a variety of activities such as subsistance farming, herding, and collection of forest products.

Some were Jhum Cultivators:

1. Jhum cultivation that is shifting cultivation was done on small patches of land, mostly in forests. (*BEWAR= term used for shifting cultivation in Madhya Pradesh)
2. The cultivators cut the treetops to allow sunlight to reach ground, and burnt the vegetation on the land to clear it for cultivation.
3. Once the crop was ready and harvested they moved to another field and left that field fallow for several years.
4. This type of cultivation is considered to be the primitive type of cultivation and took as the loos to the forest wealth.

Assignment:-

1. Write some activities of tribals.
2. Define BEWAR.
3. Describe about ‘Jhum Cultivation’.

SANSKRIT

कण्टकेनैव कण्टकम्

पाठ सार : -
मध्य प्रदेश के डिण्डोरी जिले में परधानों के मध्य अनेक लोककथाएँ प्रचलित हैं। इनमें एक कथा है-धर्म में धक्का तथा पाप में पुण्य। यह कथा पञ्चतन्त्र की शैली में लिखी गई है। इस कथा में यह बताया गया है कि संकट में पड़ने पर भी चतुराई और प्रत्युत्पन्नमति से उस संकट से निकला जा सकता है। कथा का सार इस प्रकार है कोई चञ्चल नाम का शिकारी था। एक बार उसने वन में जाल बिछाया। उस जाल में एक बाघ फँस गया।

बाघ की प्रार्थना पर शिकारी ने बाघ को जाल से बाहर निकाल दिया। बाघ ने शिकारी से पानी माँगा। पानी पीकर बाघ शिकारी को खाने के लिए दौड़ा। बाघ की कृतघ्नता से हताश शिकारी नदी के जल के पास गया। नदी का जल कहने लगा कि यह लोक अत्यधिक स्वार्थी है। लोग जल पीते हैं और मुझे ही गन्दा करते हैं। उसकी बात न करते हुए वृक्ष कहने लगा कि लोग मेरी छाया में बैठते हैं तथा मेरे फल खाते हैं और मुझे ही काटते हैं।
तब शिकारी ने अपनी व्यथा एक लोमड़ी को सुनाई। लोमड़ी ने अपनी तीव्र बुद्धि का परिचय देते हुए बाघ को पुनः जाल में फँसा दिया। इस प्रकार लोमड़ी की बुद्धिमत्ता से शिकारी के प्राण बच गए।

मूलपाठः, अन्वयः, शब्दार्थः सरलार्थश्च

(क) आसीत् कश्चित् चञ्चलो नाम व्याधः। पक्षिमृगादीनां ग्रहणेन सः स्वीयां जीविका निर्वाहयति स्म। एकदा सः वने जालं विस्तीर्य गृहम् आगतवान्। अन्यस्मिन् दिवसे प्रातःकाले यदा चञ्चलः वनं गतवान् तदा सः दृष्टवान् यत् तेन विस्तारिते जाले दौर्भाग्याद् एकः व्याघ्रः बद्धः आसीत्। सोऽचिन्तयत्, 'व्याघ्रः मां खादिष्यति अतएव पलायनं करणीयम्।' व्याघ्रः न्यवेदयत्-'भो मानव! कल्याणं भवतु ते। यदि त्वं मां मोचयिष्यसि तर्हि अहं त्वां न हनिष्यामि।'

शब्दार्थ-
कश्चित्-कोई।
मृगादीनाम्-मृग आदि का (Deerlike)।
स्वीयाम्-अपनी (स्वयं की)।
निर्वाहयति स्म-निर्वाह करता था (चलाता था)।
विस्तीर्य-फैलाकर।
अन्यस्मिन्-दूसरे।
गतवान्-गया।
यत्-कि।
व्याधः-शिकारी (Hunter)।

ग्रहणेन-पकड़ने से।
जीविकाम्-आजीविका को।
एकदा-एक बार।
तदा-तब।
आगतवान्-आ गया।
यदा-जब।
दृष्टवान्-देखा।
दौर्भाग्याद्-दुर्भाग्य से (Unfortunately)।
बद्धः-बँधा।
खादिष्यति-खा लेगा।
न्यवेदयत्-निवेदन किया।
ते-तेरा।
मोचयिष्यसि-छुड़ा दोगे/मुक्त करोगे।
हनिष्यामि-मारूँगा।
विस्तारिते-फैलाए गए।
व्याघ्रः-बाघ (Tiger)।
माम्-मुझे/मुझको।
पलायनम्-भाग जाना।
भवतु-होवे।
माम्-मुझे।
तर्हि-तो।
आसीत्-था।

सरलार्थ-
चञ्चल नामक कोई शिकारी था। वह पक्षियों और पशुओं आदि को पकड़ कर अपनी जीविका का निर्वाह करता था। एक बार वह जंगल में जाल फैलाकर घर आ गया। दूसरे दिन प्रातःकाल जब चञ्चल वन में गया, तब उसने देखा कि उसके द्वारा फैलाए गए जाल में दुर्भाग्य से एक बाघ बँधा हुआ था। उसने सोचा-'बाघ मुझे खा जाएगा। अत: भाग जाना चाहिए'। बाघ ने निवेदन किया-अरे मानव! तुम्हारा कल्याण होवे। यदि तुम मुझे छुड़ा दोगे तो मैं तुम्हें नहीं मारूँगा।'

(ख) तदा सः व्याधः व्याघ्रं जालात् बहिः निरसारयत्। व्याघ्रः क्लान्तः आसीत्। सोऽवदत्, 'भो मानव! पिपासुः अहम्। नद्याः जलमानीय मम पिपासां शमय। व्याघ्रः जलं पीत्वा पुनः व्याधमवदत्, शमय मे पिपासा। साम्प्रतं बुभुक्षितोऽस्मि। इदानीम् अहं त्वां खादिष्यामि।' चञ्चलः उक्तवान्, 'अहं त्वत्कृते धर्मम् आचरितवान्। त्वया मिथ्या भणितम्। त्वं मां खादितुम् इच्छसि?

शब्दार्थ-
बहिः-बाहर (Outside)।
क्लान्तः-थका हुआ (Tired)।
नद्याः-नदी से।
पिपासाम्-प्यास को।
पीत्वा-पीकर।
अवदत्-कहा/बोला।

बुभुक्षितः-भूखा।
खादिष्यामि-खाऊँगा।
त्वत्कृते-तुम्हारे लिए।
मिथ्या-झूठ।
खादितुम्-खाने के लिए।
निरसारयत्-निकाला।
पिपासुः-प्यासा (Thirsty)।
आनीय-लाकर।
शमय-शान्त करो।
साम्प्रतम्-इस समय।
इदानीम्-अब।
उक्तवान्-कहा।
आचरितवान्-आचरण किया है (Behave)
भणितम्-कहा।
इच्छसि-(तुम) चाहते हो।

सरलार्थ-तब उस शिकारी ने बाघ को जाल से बाहर निकाल दिया। बाघ थका हुआ था। उसने कहा-'हे मानव! मैं प्यासा हूँ। नदी से जल लाकर मेरी प्यास बुझाओ।' बाघ ने जल पीकर पुनः शिकारी से कहा-'मेरी प्यास बुझ गई है। इस समय मैं भूखा हूँ। अब मैं तुम्हें खाऊँगा।' चञ्चल ने कहा-'मैंने तुम्हारे लिए धर्म का आचरण (व्यवहार) किया है। तुमने झूठ बोला है। तुम मुझे खाना चाहते हो।'

(ग) व्याघ्रः अवदत्, 'अरे मूर्ख! क्षुधार्ताय किमपि अकार्यम् न भवति। सर्वः स्वार्थं समीहते' चञ्चलः नदीजलम् अपृच्छत्। नदीजलम् अवदत्, 'एवमेव भवति, जनाः मयि स्नानं कुर्वन्ति, वस्त्राणि प्रक्षालयन्ति तथा च मल-मूत्रादिकं विसृज्य निवर्तन्ते, वस्तुतः सर्वः स्वार्थं समीहते।

शब्दार्थ-
क्षुधार्ताय-भूखे के लिए।
समीहते-चाहते हैं।
अपृच्छत्-पूछा।
एव-ही।
वस्त्राणि-वस्त्रों को।
विसृज्य-त्याग कर (छोड़कर)।
कमपि-किसी से भी।
एवम्-ऐसा।
मयि-मुझ में।
प्रक्षालयन्ति-धोते हैं।
निवर्तन्ते-चले जाते हैं।
विसृज्य-त्याग कर (छोड़कर)।

सरलार्थ-बाघ ने कहा-'अरे मूर्ख! भूखे (प्राणी) के लिए कुछ भी अनुचित नहीं होता है। सभी स्वार्थ चाहते हैं। चञ्चल ने नदी के जल से पूछा। नदी के जल ने कहा-'ऐसा ही होता है। लोग मेरे जल में स्नान करते हैं, कपड़े धोते हैं तथा मलमूत्र आदि का त्याग करके

वापस लौट जाते हैं। वस्तुतः सभी स्वार्थ चाहते हैं।

(घ) चञ्चल: वृक्षम् उपगम्य अपृच्छत्।वृक्षः अवदत्, 'मानवाः अस्माकं छायायां विरमन्ति। अस्माकं फलानि खादन्ति, पुनः कुठारैः प्रहृत्य अस्मभ्यं सर्वदा कष्टं ददति। यत्र कुत्रापि छेदनं कुर्वन्ति। सर्वः स्वार्थं समीहते।'

शब्दार्थ-
उपगम्य-पास जाकर।
छायायाम्-छाया में।
खादन्ति-खाते हैं।
प्रहृत्य-प्रहार करके (Hit)
सर्वदा-सदा (हमेशा)।
यत्र कुत्रापि-जहाँ कहीं भी।
अस्माकम्-हमारी।
विरमन्ति-आराम करते हैं।
कुठारैः-कुल्हाड़ों से।
अस्मभ्यम्-हमें।
ददति-देते हैं।
छेदनम्-काटना।

सरलार्थ-
चञ्चल ने वृक्ष के पास जाकर पूछा। वृक्ष कहने लगा-'मनुष्य हमारी छाया में आराम करते हैं, हमारे फल खाते हैं। फिर कुल्हाड़ों से प्रहार करके हमें सदा कष्ट देते हैं। जहाँ कहीं भी काट डालते हैं। सभी स्वार्थ चाहते हैं।

(ङ) समीपे एका लोमशिका बदरी-गुल्मानां पृष्ठे निलीना एतां वार्ता शृणोति स्म। सा सहसा चञ्चलमुपसृत्य कथयति-"का वार्ता? माम् अपि विज्ञापय।" सः अवदत्-"अहह मातृस्वसः! अवसरे त्वं समागतवती। मया अस्य व्याघ्रस्य प्राणाः रक्षिताः, परम् एषः मामेव खादितुम् इच्छति।" तदनन्तरं सः लोमशिकायै निखिला कथां न्यवेदयत्।

शब्दार्थ-
समीपे-पास में।
बदरी०-बेर की।
पृष्ठे-पीछे।
वार्ताम्-बात को।
सहसा-एकदम (अचानक)।
का-क्या।
मातृस्वसः-मौसी।
समागतवती-आई हो।
लोमशिका-लोमड़ी।
गुल्मानाम्-झाड़ियों के (Bushes)।
निलीना-छिपी हुई।
शृणोति स्म-सुन रही थी।
उपसृत्य-पास जाकर।

विज्ञापय-बताओ।
अवसरे-ठीक समय पर।
मया-मैंने / मेरे द्वारा।
रक्षिताः-रक्षा की है।
तदनन्तरम्-इसके पश्चात्।
न्यवेदयत्-कह दी (बताई)।
निखिलाम्-सारी (संपूर्ण) (Complete)।
परम्-परन्तु।
वार्ता-बात।
मामेव-मुझको ही।

सरलार्थ-
पास में बेर की झाड़ियों के पीछे छिपी हुई एक लोमड़ी इस बात को सुन रही थी। वह अचानक चञ्चल के पास जाकर कहने लगी-"क्या बातचीत है? मुझे भी बताइए।" वह कहने लगा-"अरे, मौसी! तुम ठीक समय पर आई हो। मैंने इस बाघ के प्राणों की रक्षा की है, परन्तु यह मुझे ही खाना चाहता है।" इसके बाद उसने लोमड़ी को सम्पूर्ण कथा बता दी।

(च) लोमशिका चञ्चलम् अकथयत्-बाढम्, त्वं जालं प्रसारय। पुनः सा व्याघ्रम् अवदत्-केन प्रकारेण त्वम् एतस्मिन् जाले बद्धः इति अहं प्रत्यक्षं द्रष्टुमिच्छामि। व्याघ्रः तद् वृत्तान्तं प्रदर्शयितुं तस्मिन् जाले प्राविशत् । लोमशिका पुनः अकथयत्-सम्प्रति पुनः पुनः कूर्दनं कृत्वा दर्शय। सः तथैव समाचरत् । अनारतं कूर्दनेन सः श्रान्तः अभवत्। जाले बद्धः सः व्याघ्रः क्लान्तः सन् निःसहायो भूत्वा तत्र अपतत् प्राणभिक्षामिव च अयाचत। लोमशिका व्याघ्रम् अवदत् सत्यं त्वया भणितम् 'सर्वः स्वार्थं समीहते।'

शब्दार्थ-
बाढम्-ठीक है/अच्छा।
केन प्रकारेण-किस प्रकार से।
द्रष्टुम्-देखना।
प्रदर्शयितुम्-दिखाने के लिए।
पुनः पुनः-बार बार।
दर्शय-दिखाओ (Show)
समाचरत्-आचरण किया।
श्रान्तः-थका हुआ।
अयाचत-माँगने लगा।
बद्धम्-बँधा हुआ।
प्रत्यावर्तत-लौट आया।
प्रसारय-फैलाओ।
एतस्मिन्-इस (सप्तमी)।
वृत्तान्तम्-घटना को (Incident)।
प्राविशत्-प्रवेश कर गया।
कूर्दनम्-कूदना।
तथैव-उसी प्रकार।
अनारतम्-लगातार।

क्लान्तः-थका हुआ।
भणितम्-कहा था।
दृष्ट्वा -देखकर।
अपतत्-गिर गया।

सरलार्थ-
लोमड़ी ने चञ्चल से कहा-अच्छा। तुम जाल फैलाओ। फिर उसने बाघ से कहा-तुम किस प्रकार इस जाल में बँधे थे-यह मैं अपने सामने देखना चाहती हैं। बाघ उस घटना को दिखाने के लिए उस जाल में घुस गया। लोमडी ने फिर कहा-अब बार-बार उछलकूद करके दिखाओ। उसने वैसा ही आचरण किया। लगातार उछलकूद से वह थक गया। जाल में बँधा हुआ वह बाघ निढाल होता हुआ असहाय होकर वहाँ गिर पड़ा तथा प्राणों की भीख माँगने लगा। लोमड़ी ने बाघ से कहा-'तुमने सच कहा था। सभी स्वार्थ चाहते हैं।

ReplyForward